IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

महिलाओं की प्रस्थिति पर संचार माध्यमों का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. प्रतिभा श्रीवास्तव[1] एंव राजेन्द्र कुमार साकेत[2]
शोध निर्देशक, सेवानिवृत्त प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग
शासकीय इन्दिरागांधी गृहविज्ञान स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, शहडोल, (म.प्र.)
शोध छात्र, समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश :–

जनगणना 2011 के अनुसार भारत की जनसंख्या विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है, इस जनसंख्या की लगभग 68.80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण परिवेश में रहती है। भारत की कुल जनसंख्या का 48.27 प्रतिशत जनसंख्या महिलाओं की है। इस प्रकार सम्पूर्ण जनसंख्या का दो तिहाई जनसंख्या ग्रामीण अंचलो में निवास करती है, ग्रामीण जनसंख्या की आधी आबादी महिलाओं की है। इस प्रकार भारत की आधी आवादी जो गाँवों में निवास करती है को छोड़कर हम विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं, महिलायें राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती हैं। विश्व स्तर पर किसी भी देश के आँकड़ों का विश्लेषण करेंगे तो हम पायेंगे की वही राष्ट्र विकसित है, जिस राष्ट्र में महिलायें पुरुषों के समान कार्य करती है एवं उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त है। मनु के अनुसार ''जहाँ महिलाओं की दुर्दशा होती है वहाँ सम्पूर्ण परिवार का विनाश हो जाता है किन्तु जहाँ वे सुखी है वहाँ परिवार सदैव समृद्धि को प्राप्त करता है।

मुख्य शब्द – संचार, माध्यम, महिला, सशक्तीकरण ग्रामीण, प्रस्थिति आदि।

परिचय :–

संचार माध्यम के प्रभाव से महिलाओं का कितना विकास हुआ, इसी सन्दर्भ में चर्चा करेंगे। महिला विकास का तात्पर्य महिलायें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में कितना सशक्त हुई। संचार माध्यम इन ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में क्या योगदान दिया। ग्रामीण महिलाओं को प्रत्येक स्तर पर संचार माध्यम सहयोग कर उनको विकास के पथ आगे ला रहा है। भारत की संस्कृति विविधता में एकता को बनाये रखने वाली शान्तिपूर्ण, सौहार्दपूर्ण एवं समरसता वाली संस्कृति है। जनगणना–2011 के अनुसार भारत की जनसंख्या विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है, इस जनसंख्या कीलगभग 68.80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण परिवेश में रहती है। भारत की कुल जनसंख्या का 4827 प्रतिशत जनसंख्या महिलाओ ं की है। इस प्रकार सम्पूर्ण जनसंख्या का दो तिहाई जनसंख्या ग्रामीण अंचलो में निवास करती है, ग्रामीण जनसंख्या की आधी आबादी महिलाओ ं की है। इस प्रकार भारत की आधी आवादी जो गाँवो ं में निवास करती है को छोड़कर हम विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं, महिलायें राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती हैं। विश्व स्तर पर किसी भी देश के आँकड़ों का विश्लेषण करेंगे तो हम पायेंगे की वही राष्ट्र विकसित है, जिस राष्ट्र में महिलायें पुरुषों के समान कार्य करती है एवं उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त है।मनु के अनुसार ''जहाँ महिलाओं की दूर्दशा होती है वहाँ सम्पूर्ण परिवार का विनाश हो जाता है किन्तु जहाँ वे सुखी है वहाँ परिवार सदैव समृद्धि को प्राप्त करता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति बहुत निम्न थी संसाधनो ं का अभाव, आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक, मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी स्तर पर भी उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे। ग्रामीण परिवेश की महिलायें चहारदीवारी के अन्दर बन्द थी, उन्हें किसी भी प्रकार की कोई स्वतंत्रता प्राप्त नही था। उत्तर वैदिक काल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक महिलायें केवल उपभोग की वस्तु थी। उनको किसी भी प्रकार का कोई अधिकार प्राप्त नहीं था। स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न कानूनों के माध्यम से महिलाओ ं को उनके अधिकार दिये गये, लेकिन अभी जागरूकता के अभाव में महिलायें सशक्त नहीं हो सकी हैं। इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जब संचार का विस्तृत विस्तार हुआ जिससे महिलाओं में जागरूकता बढ़ने लगी तो वे सशक्त होने लगी। संचार माध्यमों ने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने एवं उनको सशक्त बनाने में महत्त्वूर्ण भूमिका निभा रहा है। एस0सी0 दूबे के अनुसार ''मनुष्य जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी तब बनता है जब वह संचार द्वारा सांस्कृतिक अभिवृत्तियों, मूल्यों और व्यवहार, प्रकारों को आत्मसात कर लेता है। ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति में बदलाव लाने में संचार माध्यमो ं का बहुत बड़ा योगदान है। संचार माध्यम ने आज पुरे विश्व को एवं ग्राम में बदल दिया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलायें जो केवल उपभोग की वस्तु थीं, आज जागरूक होकर अपने अधिकारों की माँग कर रही हैं। आज महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में एवं प्रत्येक स्तर पर पुरुषों से कमजोर नहीं हैं। महिलाओं को केवल मनोवैज्ञानिक स्तर पर कमजोर कर, उनका अब तक शोषण होता रहा। संचार क्रान्ति ने महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया है। वोरडेनेव के अनुसार 'यदि ग्रामीण विकास की सम्पूर्ण स्थिति की समीक्षा की जाय तो कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास में संचार माध्यमों की महत्त्वूर्ण भूमिका है। संचार के नये उपागमों को अपनाकर ग्रामीण विकास के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। प्रत्येक देश की अपनी निजी संस्कृति होती है जो उसे अन्य देशों की संस्कृति से भिन्न करती है। भारत की संस्कृति विभिन्नता में एकता को बनाये रखने वाली, कृषि आधारित आर्थिक व्यवस्था पर निर्भर करती है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के कारण भारत की लगभग दो तिहाई जनसंख्या गाँवों में निवास करती है।

भारतीय समाज में आधुनिक काल में महिला की स्थिति तथा उससे जुड़े हुए प्रश्नों की चर्चा करने से पूर्व, हम इतिहास के पृष्ठों पर महिलाओं की प्रस्थिति कैसी थी यह समझना आवश्यक है। सामाजिक जीवन कभी भी देश व काल के प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता है। प्राचीन भारतीय समाज में महिला का दर्जा बहुत ऊँचा था– ऐसी मान्यताओं को यथार्थ की कसौटी पर कसने की आवश्यकता है। जब प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति एवं रहन–सहन का स्तर ऊँचा था तो उनकी प्रस्थिति का ह्रास कब हुआ और क्या कारण था कि महिलायें निरन्तर अपनी प्रस्थिति को खोती गई। वर्तमान वैश्विक परिवेश में मीडिया एक प्रभावशाली साधन है जिसकी पहुँच करोड़ों लोगों तक है। आधुनिक तकनीकि का महिला एवं पुरुष, युवा और वृद्ध सभी पर प्रभाव पड़ा है। प्रिंट मीडिया, रेडियो, टी0वी0, सिनेमा, फिल्में, इण्टरनेट, सोशल मीडिया, ये सभी मीडिया के घटक हैं। मीडिया ने महिलाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। देश की समाजिक–आर्थिक विकास के लिये ग्रामीण महिला सशक्तीकरण अति आवश्यक है और इसी कारण देश के विकास के लिये ग्रामीण महिला सशक्तीकरण ग्रामीण विकास के लिये सर्वाधिक महत्त्वूर्ण है। महिलाओं का सशक्तीकरण, जीवन के सभी क्षेत्रों में सतत् विकास, पारदर्शी तथा उत्तरदायी सरकार एवं प्रशासन के लिये आवश्यक है। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओ ं एवं पुरुषों की समान भागीदारी ग्रामीण समाज एवं देश के संतुलित विकास को बढ़ावा देगी, जिससे अन्ततः भारतीय लोकतंत्र को मजबूती मिलेगी एवं भारत का विकासतेजी से हो सकेगा। ग्रामीण महिलाओं का सभी स्तरों पर निर्णय एवंनीति–निर्माण तथा क्रियान्वयन में सक्रिय सहभागिता के बिना समानता, सामाजिक न्याय एवं लोकतांत्रिक आदर्शो की प्राप्ति नहीं हो सकेगी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

साहित्य शोध समीक्षा –

ओम प्रकाश सिंह द्वारा लिखित 'संचार माध्यमो ं का प्रभाव' सन् 1993 में क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक में संचार माध्यमो ं के प्रभाव से भारत के परम्परागत समाज में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में बदलाव आया है। संचार माध्यम सरकार के योजनाओ ं के क्रियान्वयन में सहयोगी भूमिका निभाता है। संचार का विकास के साथ इसकी उपयोगिता का भी विस्तृत चर्चा की गई है। ग्रामीण समाज में संचार के पहुँचने के माध्यम एवं बदलाव को दर्शाते हुए राजनैतिक जागरूकता पर विशेष जोर दिया गया है।

डॉ0 एम0एम0 लवानिया द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतीय महिलाओ ं का समाजशास्त्र' जो रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर से प्रकाशित है में भारतीय महिलाओ ं की प्रस्थिति (वैदिक काल से लेकर– इक्कीसवीं सदी तक) की चर्चा की गई है। भारतीय महिलाओं के सशक्तीकरण की इस पुस्तक में विस्तृत चर्चा की गई है। भारतीय महिलायें विभिन्न माध्यमो ं से निरन्तर सशक्त हो रही है। मध्यकाल में जो महिलायें दासी थी, आज वह स्वतंत्र होकर भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसीत करने में अपना योगदान दे रही है। इसमें लैंगिक असमानता को दूर करने में भारतीय हस्तियों के योगदान की भी चर्चा की गई है। इस पुस्तक में मुख्य फोकस महिला सशक्तीकरण पर है।

शोध कार्य के प्रस्तावित उद्देश्य : –

किसी भी क्षेत्र में शोध कार्य हेतु उद्देश्य का महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, उद्देश्य शोध को निश्चित परिधि प्रदान करता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर शोधकर्त्ता ने निम्नलिखित उद्देश्य बनाये हैं –

1. ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान प्रस्थिति का आकलन।
2. महिलाओं के सशक्तिकरण में संचार माध्यमो ं की भूमिका का सर्वेक्षण करना।
3. ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण सम्बन्धी तथ्यों का आकलन करना।
4. ग्रामीण विकास से सम्बन्धित कार्यक्रमों में संचार की भूमिका का आकलन करना।

उपकल्पना : –

प्रस्तावित शोध किसी समस्या की अस्थाई कल्पना है जिसका परीक्षण किया जाना है। शोधार्थी उपकल्पनाओं को निर्मित करने के पश्चात् उसकी प्रमाणिकता की जाँच करता है। इस शोध प्रबन्ध में निम्न उपकल्पनाओं को शोधार्थी ने निर्मित की है –

1. संचार के माध्यमों ने ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रस्थिति को सशक्त किया है।
2. ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ी है।
3. ग्रामीण महिलाओं के शिक्षा एवं स्वास्थ्य के स्तर में सुधार आ रहा है।

निष्कर्ष : –

संचार माध्यम ने आज पुरे विश्व को एवं ग्राम में बदल दिया है, आधुनिक तकनीकि का महिला एवं पुरुष, युवा और वृद्ध सभी पर प्रभाव पड़ा है। प्रिंट मीडिया, रेडियो, टी0 वी0, सिनेमा, फिल्में, इण्टरनेट, सोशल मीडिया, ये सभी मीडिया के घटकों के प्रयोग ने महिलाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलायें जो केवल उपभोग की वस्तु मानी जाती थीं, आज जागरूक होकर अपने अधिकारों की माँग कर रही है। आज महिलायें प्रत्येक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

क्षेत्र में एवं प्रत्येक स्तर पर पुरुषो ं से कमजोर नहीं हैं। भारतीय महिलायें विभिन्न माध्यमों से निरन्तर सशक्त हो रही है। मध्यकाल में जो महिलायें दासी थी, आज वह स्वतंत्र होकर भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसीत करने में अपना योगदान दे रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. यादव, राम गणेश : भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, ओरियंट ब्लैक स्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2014.
2. शर्मा, राधेश्याम : जनसंचार, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2010.
3. यादव, अवधेश कुमार : भारत में जनसंचार एवं पत्रकारिता, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला, 2013
4. भानावत, संजीव : विकास एवं विज्ञान संचार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010.
5. सिंह, संदीप : ग्रामीण महिलाएँ योजनाएँ एवं विकास, इशिका पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013.
6. भानावत, संजीव : भारत में संचार माध्यम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010.
7. राजगढ़िया विष्णु : जनसंचार सिद्धान्त और अनुप्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011.
8. एम0एम0 लवानिया : भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, रिशर्च पब्लिकेशन, जयपुर,
9. अरुण, एस0के0, त्यागी, बी0डी0 : जन संचार एवं कृषि पत्रकारिता, रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2014.
10. वाशिष्ठ मीनाक्षी त्रिखा : इलेक्ट्रानिक युग में पत्रकारिता का बदलता स्वरूप, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010.
11. देसाई, नीरा, ठक्कर, उषा : भारतीय समा में महिलाएँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2008.
12. लवानिया, एम0एम0, जैन, शशी के0 : ग्रामीण समाजशास्त्र, रिशर्च पब्लिकेशन, जयपुर,
13. सिंह, वी0एन0, सिंह, जनमेजय : भारत में सामाजिक आन्दोलन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2005.
14. विलानिलय, जे0वी0 : जनसंचार : सिद्धान्त और व्यवहार, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2003.
15. चोपड़ा, लक्ष्मेद्र : जनसंचार का समाजशास्त्र, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2002.
16. सिंह, ओमप्रकाश : संचार के मूल सिद्धान्त, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2002.
17. सिंह, ओम प्रकाश : संचार माध्यमों का प्रभाव, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 1993.
18. मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ : सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2009.
19. वर्मा, ओमप्रकाश : ग्रामीण समाजशास्त्र, विमल प्रकाशन मन्दिर, आगरा, 1992
20. दुबे, श्यामाचरण : भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2001.

पत्र – पत्रिकाएं एवं जर्नल्स –

- योजना पत्रिका सत्र 2020
- दैनिक जागरण
- नवभारत, जबलपुर
- टुडे न्यूज, सतना
- नवभारत

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

- दैनिक भास्कर,
- स्टार समाचार पत्र
- रोजगार समाचार पत्र
- रोजगार निर्माण पत्र